❖भूमिका

हिंदी को 14 सितंबर 1949 को भारतीय संविधान में भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। हिंदी भारत के अधिकांश लोगों की भाषा है ख़ासकर इस अर्थ में उपर्युक्त क्षेत्रों में बोली जानेवाली भाषाओं के लिए यह एक छतरी के समान है। यह दोनों ही स्थितियों में भाषा-सातत्य क़ायम रखती है। हिंदी का क्षेत्र विस्तृत है। यह उतरप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, झारखंड, आदि क्षेत्रों में बोली जाती है। विश्व के विभिन्न भागों जैसे वेस्टइंडीज, दक्षिण अफ्रीका, केन्या, यूनाइटेड अरब अमीरात, कनाडा, यमन, ज़ाम्बिया, यू.के और अमेरिका में यह भाषा प्रचलित है। बहरहाल, हिंदी ब्रज, भोजपुरी, मैथिली, बुंदेली, मगही जैसी नजदीकी भाषाओं के बोलनेवालों की ही संपर्क भाषा नहीं है,बल्कि यह प्राय: गुजराती, मराठी, बंगाली, नेपाली जैसी दूर की भाषाओं के बोलने वालों की भी संपर्क भाषा है। यह भौगोलिक दृष्टि से पंजाब एवं हरियाणा जैसे समतल प्रदेशों की ही नहीं बल्कि हिमाचल और गढ़वाल जैसे पहाड़ी प्रदेशों की भी संपर्क भाषा है। मगर इस फैलाव के बावजूद यह कहना ठीक नहीं होगा कि हिंदी पूरे देश की संपर्क भाषा है। भारत के दक्षिणी एवं उतरी-पूर्वी वृहत्तर भू-भागों में यह बिलकुल ही नहीं बोली या समझी जाती है।

भोजपुरी हिंदी की आधार बोलियों में से एक है। भोजपुरी का क्षेत्र-विस्तार और प्रयोग-क्षेत्र हिंदी की अन्य बोलियों से अधिक है। हिंदी और भोजपुरी की रूप और ध्वनि में पर्याप्त भिन्नताएँ भी हैं और समानताएँ भी हैं। यही कारण है कि भोजपुरी की ध्वनि, रूप आदि को लेकर शोधकार्य किए गए हैं। प्रस्तुत शोध-कार्य इन्हीं शोधों के क्रम में एक नवीन प्रयास है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में परसर्ग के स्तर पर हिंदी और भोजपुरी में उपस्थित समानता और असमानता अर्थात तुलना को दिखाने का प्रयास किया गया है।

❖विषय प्रवेश

भोजपुरी भाषाई परिवार के स्तर पर हिंदी की एक आधार बोली है। यह मुख्य रूप से पश्चिम बिहार और पूर्वी उतर प्रदेश और उतरी झारखंड के क्षेत्र में बोली जाती है। यह भारत के अलावा कई देशों में भी बोली जाती है। इनमें नेपाल, मारिशस, सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिदाद और टोबैगो, फिजी आदि देश प्रमुख हैं। भारत में हुई 2001 की जनगणना आंकड़ों के अनुसार भारत में 33,099,497 लोग भोजपुरी बोलते हैं। पूरे विश्व में भोजपुरी जानने वालों की संख्या लगभग 5 करोड़ है। एक उपलब्ध आकड़ें के अनुसार नेपाल में 9% (250 लाख) लोगों द्वारा हिंदी बोली जाती है। क्षेत्र-विस्तार और भाषा-भाषियों की संख्या के आधार पर भोजपुरी अपने संवर्ग की मैथिली और मगही में बड़ी है। भोजपुरी भाषा का नामकरण बिहार राज्य के आरा (शाहाबाद) जिले में स्थित भोजपुर नामक गाँव के नाम पर हुआ है। प्रारम्भ में भोजपुरी की लिपि कैथी थी, परंतु आगे चलकर इसकी लिपि देवनागरी हो गई।

भोजपुरी के व्याकरण और हिंदी के व्याकरण में समानताओं के साथ-साथ भिन्नता भी पाई जाती है। इसे सभी व्याकरणिक ईकाइयों के स्तर पर देखा जा सकता है। प्रस्तावित अध्ययन में हिंदी और भोजपुरी में पाई जाने वाली भिन्नताओं को विश्लेषित-विवेचित करते हुए, दोनों के संबंधों का स्वरूप विवेचन पहले किया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में हिंदी और भोजपुरी के परसर्गों को मुख्य रूप से विवेचित किया गया है। भोजपुरी और हिंदी के तुलनात्मक विवेचन से यह निश्चित करने में काफी मदद मिल सकती है कि भाषा की दृष्टि से दोनों कितनी अलग हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में परसर्ग और कारक संबंध को भी विवेचित किया गया है। इस शोध प्रबंध में हिंदी और भोजपुरी के मिश्र परसर्गों को भी प्रस्तुत किया गया है।

❖महत्व

प्रस्तुत शोध के महत्व को देखें तो यह निम्नलिखित क्षेत्रों में उपयोगी हो सकता है-

1-इस शोध कार्य के आधार पर हिंदी भाषा को समझने तथा भोजपुरी को समझने में मदद मिलेगी।

2-इस शोध कार्य के माध्यम से भोजपुरी बोली तथा हिंदी भाषा की प्रकृति को समझा जा सकता है।

3-भविष्य में इस क्षेत्र में किए जाने वाले शोध कार्यो के लिए यह प्रासंगिक विषय है।

4-भाषा-शिक्षण के क्षेत्र में भी शोध कार्य उपयोगी होगा।

5-मशीनी अनुवाद के क्षेत्र में भी यह शोध कार्य उपयोगी सिद्ध होगा।

6-रूप वैज्ञानिक अध्ययन में ।

❖परिकल्पना/ शोध वकतव्य

1. यद्यपि भोजपुरी, हिंदी की एक आधार बोली है, तथापि भोजपुरी के व्याकरण और हिंदी के व्याकरण में समानताओं के साथ-साथ भिन्नता भी पाई जाती है ।
2. इसे सभी व्याकरणिक ईकाइयों के संदर्भ में देखा जा सकता है।
3. प्रस्तावित अध्ययन में हिंदी और भोजपुरी में पाई जाने वाली भिन्नताओं को विश्लेषित, विवेचित करते हुए, दोनों के संबंधों का स्वरूप विवेचन अभीष्ट है।
4. भोजपुरी और हिंदी के तुलनात्मक विवेचन से यह निश्चित करने में काफी मदद मिल सकती है कि भाषा की दृष्टि से दोनों कितने स्वतंत्र हैं।

❖शोध की प्रकृति

प्रस्तुत शोध की प्रकृति विश्लेषणात्मक है। इसके अंतर्गत हिंदी और भोजपुरी के परसर्ग का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। यह विश्लेषण कारक संबंध के आधार पर किया गया है।

❖शोध की सीमाएँ

प्रस्तुत शोध की निम्नलिखित सीमाएँ हैं-

1- प्रस्तुत शोध हिंदी और भोजपुरी के सिर्फ परसर्ग का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करेगा।

2- प्रस्तुत शोध भोजपुर, सासाराम, कैमूर जिला के आस-पास बोली जा रही भोजपुरी तक सीमित है।

❖शोध प्रविधि

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध भाषा विद्यापीठ के भाषा प्रौद्योगिकी के एम.फिल पाठ्यक्रम के आंशिक प्रतिपूर्ति हेतु प्रस्तुत है, इस शोध प्रविधि की दृष्टि से संपुष्ट करने हेतु भाषावैज्ञानिक शोध प्रविधि, जिसके अंतर्गत वाक्यों की संरचनात्मक विश्लेषण,तुलनात्मक शोध प्रविधि तथा भाषावैज्ञानिक अध्ययन के रूपवैज्ञानिक प्रविधि तथा विश्लेषणात्मक प्रविधि का उपयोग किया गया है।

❖तथ्यों/आकड़ों का संकलन एवं विश्लेषण

इस शोध में तथ्यों का संग्रह मानक हिंदी और भोजपुरी के अनुप्रयोगों के लिखित पाठों से तैयार किया गया है। शोध का विस्तृत और मुख्य अंग तथ्य संकलन और विश्लेषण है। तथ्य संकलन दो प्रकार से किया जाता है जो इस प्रकार है- प्राथमिक तथ्य/आकड़ा और द्वितीयक तथ्य।

1- **प्राथमिक तथ्य-** इस शोध को संपुष्ट करने हेतु भोजपुरी भाषी क्षेत्र के विद्वानों और भाषियों के साथ व्यापक चर्चा की गई जिसके उपरांत प्राथमिक स्रोतों में परसर्गिय विषय का चुनाव किया गया।

2- **द्वितीयक तथ्य-** शोध को व्यापक एवं अकादमिक दृष्टि से समृद्ध बनाने के उद्देश्य से, द्वितीयक स्रोतों के रूप में निकल रहे पत्रिका "पाती" (भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका), और इन्टरनेट सामग्री का इस्तेमाल किया गया है जिसके अंतर्गत अंजोरिया.कॉम (साइट) या भोजपुरिका के पेज से अखबार एवं कहानियों को लिया गया है। जिसके संपादक अशोक द्विवेदी हैं।

प्रस्तुत शोध-कार्य की व्यवस्थित प्रस्तुति के लिए इसे चार अध्यायों में विभक्त किया गया है।

❖ अध्याय विन्यास

प्रथम अध्याय में मानक हिंदी और भोजपुरी का परिचय तथा तुलनात्मक अध्ययन के सिद्धान्त को बताया गया है। इसके अंतर्गत मानक हिंदी का परिचय, हिंदी बोलियों का वर्गिकरण, तुलनात्मक अध्ययन का परिचय, उसके सिद्धान्त आदि को बताने का प्रयास किया गया है।

द्वितीय अध्याय परसर्ग पर आधारित है, जिसके अंतर्गत परसर्ग और उसके प्रकार को तथा कारक और परसर्ग के संबंध को विवेचित किया गया है। तथा इस अध्याय में हिंदी तथा परसर्ग और भोजपुरी के परसर्ग को विश्लेषित किया गया है।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत हिंदी और भोजपुरी में 'ने' परसर्ग का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत हिंदी और भोजपुरी के अन्य परसर्गों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा जिसमें 'में', को, से, के लिए, पर, का, के आदि परसर्गों का विवेचन किया गया है, तथा इसके साथ हिंदी और भोजपुरी के मिश्र परसर्गों (के ऊपर, के नीचे, के साथ, के बारे में,में से, के कारण, के पास, आदि) का भी विवेचन किया गया है।

इन समस्त बिंदुओं पर विचार करने के लिए विभिन्न पुस्तकों तथा आलेखों का सहारा लिया गया है। शोध-कार्य के अंतिम अध्याय के तहत प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण करते हुए अंत में संदर्भ-सूची प्रस्तुत की गई है। यह शोध-कार्य अपनी सीमाओं एवं त्रुटियों के साथ प्रस्तुत है। आशा है मेरा यह कार्य इस दिशा में किए जा रहे कार्यों में कुछ बिंदुओं को जोड़ सकेगा। कार्य की समय-सीमा और मेरी क्षमता को देखते हुए विद्वतजन इस संबंध में मेरे द्वारा की गई भूलों को माफ कर मुझे सुझाव देंगे, ऐसे आशा है।

❖ साहित्य पुनरावलोकन

इस शोध कार्य को संपन्न करने के लिए विविध प्रकार की सामग्री की सहायता ली गई है जिनमें हिंदी, भोजपुरी, अँग्रेजी की पुस्तकें, आलेख है। इनका पुनरावलोकन किया गया है। जिसका विस्तृत विवरण निम्नलिखित है-

- **डॉ. शुकदेव सिंह, 2009,*भोजपुरी और हिंदी*, विश्वविद्यालय प्रकाशन: वाराणसी**

शुकदेव सिंह ने इस पुस्तक में भोजपुरी को बताते हुए कहा है कि भोजपुरी को पढ़ने-लिखने की भाषा बनाने का श्रेय ईसाई मिशनरी को है। 1884 ई. में कलकता से भोजपुरी व्याकरण छपा था इसका उपयोग मिशनरी की एक बहुत प्रतिष्ठित सेविका एजा. एम. चाइल्ड ने मोतिहारी से लेकर बेतिया तक फैले हुए मिशनरी के सेवाकार्य के समय किया। शुकदेव सिंह ने अपनी पुस्तक में भोजपुरी के व्याकरण को विश्लेषित किया है। भोजपुरी के कारक प्रकरण को लेकर इनका कहना है कि भोजपुरी में कारकीय रूपों की रचना के लिए विभक्ति शून्य शब्दों का प्रयोग होता है और परसर्गों के प्रयोग के द्वारा शब्दों का कारकीय अभिप्राय व्यक्त किया जाता है।

इन्होंने आठ कारक की बात की है तथा इन्होंने कर्ता कारक में किसी कारकीय-चिह्न का न पाया जाना एक विरल तथ्य माना है। हिंदी में कर्म कारक के लिए 'को' परसर्ग का प्रयोग होता है और भोजपुरी में 'के' परसर्ग का प्रयोग होता है। करण कारक के लिए 'से, ले'

परसर्ग का प्रयोग होता है। इन्होंने आठवें परसर्ग में संबोधन को रखा है जिसमें हे, हो, अरे परसर्ग सम्मिलित हैं। परंतु आमतौर पर देखा जाय तो भोजपुरी में 'ए हो' परसर्ग संबोधन के लिए होता है उदाहरण-ए हो बाबू बाजार चलब का? इस शोध के अंतर्गत संबोधन के परसर्गों का विवेचन करना आवश्यक है क्योंकि शुकदेव सिंह ने अपनी पुस्तक में 'हो' परसर्ग को लिया है जो वाक्य में प्रयोग हो सकता है 'हो' परसर्ग अपने आप में पूर्ण नहीं है जितना 'ए हो' परसर्ग भोजपुरी के वाक्य में पूर्ण है। इसका एक और कारण भोजपुरी का क्षेत्र विस्तार है।

- **डॉ त्रिभुवन ओझा, 1987, *प्रमुख बिहारी बोलियों का तुलनात्मक अध्ययन*, विश्वविद्यालय प्रकाशन: वाराणसी**

डॉ त्रिभुवन ओझा ने अपनी पुस्तक में विवरणात्मक पद्धति द्वारा बिहारी बोलियों (भोजपुरी, मैथिली, और मगही) का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हुए इनके पारस्परिक अंत:संबन्धों, समानताओं और असमानताओं को आंशिक रूप से बताया है। इस पुस्तक में त्रिभुवन ओझा जी ने प्रमुख तीन बिहारी बोलियों के अध्ययन से यह संपुष्ट करना चाहा है कि किन कारणों से ये एक दूसरे से सम्बद्ध हैं तो कितनी दूर तक असमान हैं और यह कारण मौलिक कारणों से है अथवा स्थानीय भौगोलिक कारणों से ।

त्रिभुवन ओझा ने अपनी पुस्तक में ध्वनि को बताते हुए तीनों बोलियों के शब्द भेद को विवेचित किया है इन्होंने यह उल्लेख किया है कि बिहारी बोलियों में कारक- संबंध तीन प्रकार से व्यक्त होते हैं-1-वाक्यात्मक स्थिति और संदर्भ से।

2- प्राचीन कारक विभक्तियों के अवशिष्ट अंशों के द्वारा

3- स्वतंत्र परसर्गों और परसर्गीय शब्दों के द्वारा

इन्होंने यह विवेचित किया है कि बिहारी बोलियों में 'ने' परसर्ग का नितांत अभाव है। परंतु इसतरह का अभाव क्यों है इसका निदान नहीं बताया है। इस पुस्तक में लोकगीतों को उदाहरण के रूप में समाविष्ट किया गया है।

- **रमा कान्त अग्निहोत्री, 2013, *हिंदी एक मौलिक व्याकरण*, प्रकाशन: दिल्ली**

रमा कान्त अग्निहोत्री जी ने इस पुस्तक में हिंदी का संक्षिप्त परिचय देते हुए हिंदी के क्षेत्र विस्तार तथा हिंदी का दर्जा क्या है इसको प्रमाणित किया है इन्होंने हिंदी को दिल्ली, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल और मध्यप्रदेश के वंशिदों के व्यवहार की भाषा कहा है।

इन्होंने आधुनिक हिंदी भाषा के वाक्य, शब्द एवं ध्वनि संरचना की सरल शब्दों में व्याख्या किया गया है। इसको पढ़ने और समझने के लिए यह जरूरी नहीं है कि पढ़ने वाले को पहले से ही हिंदी व्याकरण या भाषा विज्ञान का ज्ञान हो।

रमा कान्त अग्निहोत्री ने इस पुस्तक में 'अपरिवर्तनशील शब्द' के अंतर्गत परसर्ग को विवेचित किया है जिसमें इन्होंने परसर्ग के प्रकृति को बताते हुए कहा है कि परसर्ग 'संज्ञा' के बाद आते हैं और 'सर्वनाम' के साथ जुड़ते हैं। अग्निहोत्री जी ने परसर्ग को 'स्वामित्व' तथा कर्तृवाचक कहा है इसी प्रकार इन्होंने हिंदी के 'को', 'में', 'पर','से' आदि परसर्गों को विवेचित किया है इसके साथ-साथ मिश्र परसर्गों को भी विवेचित किया है। इसप्रकार इन्होंने सभी परसर्गों को बताते हुए कारक संबंध को बताया है।

- **लक्ष्मीबाई बालचंद्रन, 1973, *हिंदी का कारक व्याकरण*, प्रकाशन: केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा**

लक्ष्मीबाई बालचंद्रन ने इस पुस्तक में कहा है कि बहुत प्राचीनकाल से भारतीय वैयाकरण 'कारक' की महता से अभिज्ञ रहे हैं। वाक्य में क्रिया-पद नाभिकीय स्थिति में होता है। क्रिया के साथ कितने संज्ञापद आएँगे यह क्रिया धातु की आर्थी प्रकृति पर निर्भर होता है। इस प्रकार वाक्य में क्रिया धातु के निर्धारण के पश्चात अन्य महत्वपूर्ण संरचक स्वयं निश्चित हो जाते हैं। इन्होंने यह कहा कि कारक तथ्य की ओर पश्चिम में आजकल चाम्स्की के बाद फिल्मोर द्वारा सर्वाधिक प्रकाश डाला गया है और व्याकरणिक विश्लेषण की विविध विधाओं में 'कारक-व्याकरण' भी सम्मिलित हो

गया है और इस पुस्तक में कारक के अंतर्गत 'प्रेरणार्थक' वाक्यों को लिया गया है तथा उसका विश्लेषण किया गया है।

इन्होंने इस पुस्तक में फिल्मोर के व्याकरण में स्थित कारक संबंध को भाषा की संरचना का आधार माना गया है । फिल्मोर के व्याकरण के बारे में कहा गया है कि कारक संबंध संख्या में सीमित और सार्वभौम प्रकृति के समझे जाते हैं और प्रत्येक वाक्य अपने मूल रूप से कुछ निश्चित कारक सम्बन्धों का समुच्चय होते हैं। इस व्याकरण में वाक्य का विस्तार संज्ञापद +क्रियापद में न प्रतिज्ञप्ति वाक्य का वह अंश है, जिसमें एक क्रिया और एक या एक से अधिक संज्ञाएँ सम्मिलित होती हैं। सभी संज्ञाएँ विशिष्ट अर्थों में क्रिया से अन्वित होती हैं।

❖ अँग्रेजी में उपलब्ध पुस्तकों का अवलोकन

Robert Lord, 1974, ***Comparative Linguistics*,**

Robert Lord ने अपनी पुस्तक में तुलनात्मक भाषाविज्ञान को बताया है। इन्होंने अपनी पुस्तक में कहा है सच तो यह है कि 19वीं शताब्दी तक यूरोपीय भाषावैज्ञानिकों ने इस पर विचार नहीं किया था। यदि उनपर संस्कृत के वैयाकरणों का प्रभाव नहीं पड़ा होता तो 19वीं शताब्दी तक अंग्रेजी भाषा में तुलनात्मक भाषाविज्ञान का शायद ही जन्म हुआ होता क्योंकि तुलनात्मक भाषाविज्ञान दो या दो से अधिक भाषाओं की तुलना करता है और दोनों में समता की खोज का प्रयास करता है। इसके लिए तुलना की जानेवाली भाषाओं का व्याकरणिक विश्लेषण भी उसका अभीष्ट होता है।

इन्होंने यह भी कहा है कि पारिवारिक वर्गिकरण के अंतर्गत भाषावैज्ञानिकों ने हजारों मिल के दूरी में प्रचलित विभिन्न भाषाओं जैसे-संस्कृत, ग्रीक, लैटिन, जर्मन, अँग्रेजी, तथा फारसी इनके कुछ शब्दों को देखें तो बहुत साम्य देखने को मिलता है लेकिन इसका कारण तो पता नहीं परंतु कल्पना किया जा सकता है कि इन भाषाओं का विकास एक ही मूल भाषा से हुआ है। या ऐसा भी कहा जा सकता है कि बहुत बड़े क्षेत्र में फैल जाने तथा देश और काल की सीमा के कारण इनमें ध्वन्यात्मक भिन्नता भले ही आ गयी हो, परंतु रचनात्मक की दृष्टि से ये भाषाएँ एक जैसी प्रतीत होती हैं और तुलनात्मक व्याकरण का

उद्देश्य उस दिन सफल होगा जब एक मूल भाषा से निकली हुई भिन्न-भिन्न भाषाओं में परस्पर दूरी और निकटता को संबंध को स्थापित कर दिया जाय।

- Dr.Shruti Pandey, 2003, ***A Comparative Study of Bhojpuri and Bengali,*** PRAKASHAN:VARANASI

श्रुति पाण्डेय ने अपनी पुस्तक में कहा है कि बंगाली और भोजपुरी एक दूसरे से घनिष्ठ संबंध रखते हैं। इन्होंने इस पुस्तक में बंगाली और भोजपुरी के संबंध बताया है। इन्होंने यह कहा है कि बंगाली और भोजपुरी अंतर संबंध को बताते हैं क्योंकि बिहारी बोलियों के अंतर्गत भोजपुरी, मगही और मैथिली आती हैं। जिसमें मगधी प्राकृत से बंगाली और भोजपुरी की उत्पत्ति हुई है। पूर्व मगधी के अंतर्गत 'बंगाली,असामी और उड़िया है और मध्य मगधी के अंतर्गत 'मगही और मैथिली' है तथा पश्चिम मगधी के अंतर्गत 'भोजपुरी, नागपुरिया और सदानी है। इन्होंने यह भी जिक्र किया है कि भोजपुरी का क्षेत्र चुकि विस्तृत है जैसे- उतरप्रदेश बिहार और मौरिशश में इस लिए इसे बोलने वालो की संख्या भी ज्यादा है परंतु बंगाली का क्षेत्र सीमित है। अर्थत् इन्होंने यह जानने की प्रयास की है कि क्या बंगाली और भोजपुरी के बीच में कोई समानता है या असमानता भी है।

श्रुति पाण्डेय ने बंगाली और भोजपुरी के व्याकरणिक पक्ष की तुलना की है जिसमें दोनों बोलियों के कारक व्यवस्था को भी बताया है और कर्ता कारक के चिह्न या परसर्ग 'ने' का आभाव दोनों बोलियों में है। तथा पूर्व में बोली जानेवाली भोजपुरी के अंतर्गत 'से' परसर्ग के स्थान पर 'ले' प्रयुक्त होता है। परंतु इन्होंने इसे अपादान कारक के अंतर्गत सम्मिलित किया है।

- Edwin Greaves, 1983, ***Hindi Grammar,*** *PRAKASHAN*:NEW DELHI

Edwin Greaves ने अपनी इस पुस्तक में आधुनिक हिंदी को बताते हुए कहा है कि हिंदी संस्कृत से आई हुई भाषा है। इन्होंने हिंदी, उर्दू , और हिन्दुस्तानी इन तीनों का उल्लेख किया है जिसमें उर्दू की उत्पत्ति पर्सियन और अरेबिक से हुई है। यहाँ हिन्दुस्तानी शब्द को इसलिए उपयुक्त किया है कि हिंदुस्तान में हिंदी बोली जाती है जितने अकादमिक कार्य है उसमें हिंदी भाषा प्रयुक्त होता है। इन्होंने यह कहा है कि अच्छी हिंदी को समझने के लिए इसके व्याकरण को समझना आवश्यक है। इसके साथ-साथ हिंदी साहित्य को पढ़ना आवश्यक है।

Edwin Greaves ने इस पुस्तक में हिंदी व्याकरण के सभी पक्ष को लेकर काम किया है हिंदी वर्णमाला को बताते हुए छंद अलंकार को भी बताया है। इस पुस्तक में हिंदी व्याकरण को अँग्रेजी व्याकरण के रूप पर विश्लेषित किया गया है इन्होंने कारक व्यवस्था के अंतर्गत 'काल' को भी बताया है क्योंकि कारक का क्रिया के साथ अन्वित होता है। इन्होंने आठ कारक को बताया है। जिसे कामता प्रसाद गुरु ने भी बताया है जिसके अंतर्गत संबंध और अधिकरण कारक को भी विश्लेषित किया है परंतु आधुनिक भाषा-वैज्ञानिकों ने हिंदी में छ:कारकों को बताया है जिसमें 'संबंध' के चिह्न को कारक न कहकर संबंधवाची परसर्ग कहा है और देखा जाय तो यह सही रूप से वाक्य में संबंध को स्थापित करता है हालाकि कारक भी संबंध को ही व्यक्त करता है लेकिन संबंधवाची परसर्ग लिंग और वचन को भी व्यक्त करता है।